International Journal of Applied Research 2015; 1(8): 591-593

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(8): 591-593
www.allresearchjournal.com
Received: 16-05-2015
Accepted: 17-06-2015

Dr. Sanjeet Kumar Tiwari
Assistant ProfessorSchool of Education, MATS University, Aarang, Raipur (C.G)

Dr. Jubraj Khamari
Assistant ProfessorSchool of Education, MATS University, Aarang, Raipur (C.G)

Neha Jaiswar
Research Scholar (M. Phil. Education)School of Education, MATS University, Aarang, Raipur (C.G)

Correspondence:
Dr. Sanjeet Kumar Tiwari
Assistant ProfessorSchool of Education, MATS University, Aarang, Raipur (C.G)

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

Sanjeet Kumar Tiwari, Jubraj Khamari, Neha Jaiswar

संक्षेपीकरण (Abstract):– सामाजिक बुद्धि को प्रभावित करने वाले कारकों में व्यक्तिगत कारक वातावरण संबंधी कारक और मनोवैज्ञानिक कारक सम्मिलित हैं। परिवार बच्चे को मानव का सर्वप्रथम सम्पर्क प्रदान करता है। उसके व्यक्तित्व प्रतिमान को स्वरूप देने में परिवार प्रमुख भूमिका निभाता है। अच्छे परिवार सुसमायोजित व्यक्ति उत्पन्न करते हैं। बच्चे के व्यक्तित्व में स्कूल, समाज, परिवार, आस–पड़ोस का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। संक्षेप में सामाजिक रूप से बुद्धिशाली दूसरों को सहयोग देकर, दूसरों को अपना मित्र बनाकर अच्छी परिष्कृत रूचियों और शिष्टाचार का प्रदर्शन करके तथा अपने संवेगों पर नियंत्रण करके सामाजिक बुद्धि का परिचय देता है। सामाजिक बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति तथा समाज के साथ व्यवहार तथा सामाजिक संबंधों के निर्वाहन से है।

महत्वपूर्ण शब्द (Key Words):– ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र, विद्यार्थी, सामाजिक बुद्धि।

1.परिचय (Introduction)

सामाजिक बुद्धि, बुद्धि का एक प्रकार है जो किसी व्यक्ति में अन्य व्यक्तियों एवं सामाजिक संबंधों के प्रति व्यवहार में निहित होता है। सामाजिक परिपक्वता के अंतर्गत सहयोग एक आवश्यक कारक है। सामाजिक परिपक्व व्यक्ति सदा सहयोग प्रवृत्ति का होगा। दूसरों के साथ मिलजुल कर कार्य करने की इच्छा उसमें सदा रहती है और वह इस कार्य में प्रसन्नता का अनुभव करता है। बच्चे का सामाजिक विकास का एक आवश्यक तत्व है, अतः जो व्यक्तित्व या बालक जितना अधिक बुद्धिमान होगा उतना ही अधि कवह सामाजिक रूप से विकसित होगा। सामाजिक विकास में विभिन्न धार्मिक संस्थायें विशेष योगदान करती है। सामाजिक विकास में मनोरंजन तथा सूचना प्रदान करने वाले साधनों का भी महत्व होता है। सांवेगिक असंतुलन और चिंता आदि भी मानसिक विकास को प्रभावित करते हैं।

2.संबंधित साहित्य की समीक्षा (Review Related Literature)

- प्रहलाद (1982), भारद्वाज (1986), शर्मा (1986) ने, विभिन्न प्रकार के कॉलेजों के छात्रों की सामाजिक बुद्धि का अध्ययन किया। कला व विज्ञान व वाणिज्य, कला व वाणिज्य के छात्रों की सामाजिक बुद्धि में अंतर पाया गया।
- गिर व शर्मा (2006) ने 9–12 वर्ष के ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता की तुलना की। उन्होंने पाया, कि इस वर्ष के सभी विद्यार्थियों में सामान्य स्तर की सामाजिक परिपक्वता पाई गई। इस कार्य हेतु चुने गए छात्रों में छात्राओं की अपेक्षा उच्च सामाजिक परिपक्वता पाई गई।
- किरिंग (1978) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि सामाजिक बुद्धि एवं संवेदना के मध्य संबंध या उच्च स्तर के शैक्षिक मूल्यों एवं सामाजिक योग्यता के मध्य अधिक समानता पायी गई।

3.उद्देश्य एवं परिकल्पना (Objective And Hypothesis)

अध्ययन का उद्देश्य (Objective of the Study)

- ग्रामीण एवं शहरी क्षत्र के वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का मापन करना।
- शहरी क्षेत्र के विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का मापन करना।
- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विज्ञान संकाय एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का मापन करना।

अध्ययन की परिकल्पना (Hypothesis of the Study)

H_1 –ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

H_2 –शहरी क्षेत्र के विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

H_3 –ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विज्ञान संकाय एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

4.प्रणाली एवं प्रक्रिया (Methodology And Procedure)

विधि (Method):– प्रस्तुत शोध अध्ययन में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों का चयन उद्देशीय न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है।

जनसंख्या (Population):– प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए शोधकर्त्ता ने दुर्ग–भिलाई शहर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का चयन किया है।

न्यादर्श (Sampling):– प्रस्तुत लघु शोध में उद्देशीय न्यादर्श विधि द्वारा 80 ग्रामीण एवं 80 शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

विस्तार एवं सीमांकन (Scope And Delimitation):– इसमें दुर्ग–भिलाई शहर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। यह अध्ययन में सामाजिक बुद्धि के मापन हेतु सामाजिक बुद्धि मापनी का प्रयोग किया गया है।

उपकरण (Tools):– इस शोध अध्ययन में विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि को जानने हेतु डॉ. एन.के. चड्ढा द्वारा निर्मित सामाजिक बुद्धि मापनी का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधि (Statistical Techniques):– इस शोध अध्ययन में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं 'टी' मूल्य का प्रयोग किया गया है।

5.विश्लेषण एवं चर्चा (Analysis and Discussion)

प्रमाणित कल्पनाएँ (Verification of Hypothesis)

H_1 –ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

उपरोक्त परिकल्पना के परीक्षण हेतु ग्रामीण क्षेत्र के 40 तथा शहरी क्षेत्र के 40 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया एवं सामाजिक बुद्धि मापनी की सहायता से प्राप्त मूल प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा 'टी' मूल्य की गणना की गयी है। जिसका विवरण अग्रलिखित तालिका में दिया गया है –

क्र.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों कीसंख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	'टी'–मूल्य
1	ग्रामीण क्षेत्र के वाणिज्य संकाय के विद्यार्थी	40	103.88	14.22	0.94
2	शहरी क्षेत्र के वाणिज्य संकाय के विद्यार्थी	40	107.02	15.74	
Df = 78, P > 0.05 सार्थक अंतर नहीं है।					

उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट है कि वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के अंतर्गत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का मध्यमान 103.88 व 107.02 है तथा प्रमाणिक विचलन 14.22 व 15.74 प्राप्त हुआ तथा दोनों के मध्य 'टी' मूल्य का मान 0.94 प्राप्त हुआ। जो कि स्वतंत्रता की कोटि 78 पर सार्थकता पर 0.05 पर सार्थक अंतर नहीं है, जो यह प्रदर्शित करता है कि हमारी परिकल्पना स्वीकृत है।

H_2 –शहरी क्षेत्र के विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

उपरोक्त परिकल्पना के परीक्षण हेतु शहरी क्षेत्र के विज्ञान संकाय के 40 तथा वाणिज्य संकाय के 40 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया एवं सामाजिक बुद्धि मापनी की सहायता से प्राप्त मूल प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा 'टी' मूल्य की गणना की गयी है। जिसका विवरण अग्रलिखित तालिका में दिया गया है –

क्र.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	'टी'–मूल्य
1	शहरी क्षेत्र के विज्ञान संकाय के विद्यार्थी	40	106.90	14.30	0.04
2	शहरी क्षेत्र के वाणिज्य संकाय के विद्यार्थी	40	107.02	15.74	
Df = 78, P > 0.05 सार्थक अंतर नहीं है।					

उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के अंतर्गत शहरी क्षेत्र के विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का मध्यमान 106.90 व 107.02 एवं प्रमाणिक विचलन 14.40 व 15.74 प्राप्त हुआ तथा दोनों के मध्य 'टी' मूल्य का मान 0.94 प्राप्त हुआ। जो कि स्वतंत्रता की कोटि 78 सार्थकता स्तर पर 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है, जो यह प्रदर्शित करता है कि हमारी परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शहरी क्षेत्रों के विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

H_3 –ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

उपरोक्त परिकल्पना के परीक्षण हेतु ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विज्ञान संकाय के 80 एवं वाणिज्य संकाय के 80 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया एवं सामाजिक बुद्धि मापनी की सहायता से प्राप्त मूल प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा 'टी' मूल्य की गणना की गयी है। जिसका विवरण अग्रलिखित तालिका में दिया गया है –

क्र.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	'टी'–मूल्य
1	ग्रामीण क्षेत्र के विज्ञान संकाय के विद्यार्थी	80	85.47	15.12	0.54
2	शहरी क्षेत्र के वाणिज्य संकाय के विद्यार्थी	80	84.80	15.07	
df = 158, P > 0.05 सार्थक अंतर नहीं है।					

उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के अंतर्गत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विज्ञान संकाय एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का मध्यमान 85.47 व 84.30 है तथा प्रमाणिक विचलन 15.12 व 15.07 प्राप्त हुआ तथा दोनों के मध्य 'टी' मूल्य का मान 0.54 प्राप्त हुआ। जो कि स्वतंत्रता की कोटि 158 सार्थकता स्तर पर 0.05 स्तर पर

सार्थक अंतर नहीं है, जो यह प्रदर्शित करता है कि हमारी परिकल्पना स्वीकृत है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।

संदर्भित ग्रन्थ (References)

1. शर्मा श्वेता एवं गिर सोफिया (2006) –सेक्स डिफरेन्स इन सोशियल मेच्यूरिटी साइकोलिंग्वा, वाल्यूम–36।
2. जैन प्रभा व पटेल (2003)– ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ सोशियल मेच्यूरिटि ऑफ टीचिंग एप्टीट्यूट ऑन जॉब सेटिस्फेक्शन ऑफ साइकोमेट्रिक एण्ड एजुकेशन, जनवरी, 2001, वाल्यूम–32।
3. सिंधु, बी.एस. एवं शेरगिल (2001) – इफेक्ट ऑफ सोशियल मेच्यूरिटि एण्ड टीचिंग एप्टीट्यूड ऑन जॉब सेटिस्फेक्शन ऑफ साइकोमेट्रिक एण्ड एजुकेशन, जनवरी, वाल्यूम–32।
4. पाठक, पी.डी. एवं सिंग, देवेन्द्र (2000) – शिक्षा मनोविज्ञान भारतीय एवं इंडियन जरनल ऑफ साइक्रोमेट्रिक एण्ड बिस्ट एजुकेशन, वाल्यूम–33 (1)
5. गेरेट, हेनरी ई. (1980) – शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी, कल्याणी प्रकाशन, लुधियाना।
6. गेरेट, हेनरी ई. (1980) – शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी, कल्याणी प्रकाशन, लुधियाना।
7. वर्मा, पी. और श्रीवास्तव, डी.एम. (1979) – आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पेज नं. 21–22।
8. वर्मा, पी. और श्रीवास्तव, डी.एम. (1979) – आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पेज नं. 21–22।